|| श्री स्वामी सामर्थ ||

||नागमणी मंत्र||

॥श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री स्वामी समर्थाय नमः ॥

मणी रे मणी ,मणी पे फणा
फणे पे चढा हे जगत का गोना ।
मणी चले मणी के अंदर जो सुझावे जगत का बंदर ।
उलझे मणी सुलझे झाग जब चले तो सभी को दैवे धाक ॥
गुंडे पे मुंडा मुंडे पे सुंडा धारण करे गले में मणियों का झुंडा ।
धारण होके प्राण का करे जागर ,मुठी में लेके प्राण ,
परम ज्योती का करे आदर ॥
प्राण फुंक के करे कीवाड ,खोल के द्वार चौकी को करे प्रणाम ।
बांधलो मुठी को संभालो पाचों भूत ,आदेश कराके सभी को दैवे सुख ।
आनंद की कोठी,कोठी मे रहे मणीयों की गोटी,गोटी के सामने राखे
राई का दिया ,सिद्धी को करे दासी ,करे जगत को पिया ।
ज्ञानरूप में रहे शोधक ,ऐसे प्रेरक में रहे बोधक,
मणी हे शिव का प्यारा,सुंदर नयन का तारा ॥

उसमे समाई शिव कि शक्ती, धारण करने से भगत की जागे भक्ती।
सुरज हे तपन अंगन का गोला ,करे चांद को अमृतमय थैला ॥
लैके गुरुरूपी चावी घुमाकर वरदरुपी पायंडा,
खोलकर अज्ञानरूपी ताला,सरकाले मूढरुपी कडी कोयंडा।
देवे भावरूपी धक्का लैके भक्तीरूपी अरमान,
खोलकर भाग्यद्वार दिखावे ज्ञानरूपी फर्मान।
उजाला कर के कोठी को,पार करे सातो आसमान
चमकाए जीव को दिखावे परब्रम्ह का ईमान
ऐसे शिव शक्ति दवा दुवा दैवे सहारा,
मंत्र जाप ने मोहित किया जग सारा।
ऐसे स्वामी बरगत पेड़ नीचे मांडे ठान ,
दीन भगत को सिद्धी दैवे फुलावे ब्रम्हांड।
जय हो स्वामी। जय हो स्वामी। जय हो स्वामी।
अनंतकोटी ब्रह्मांड की लीला तुझमे समाई,
लेके छाता भगत के उपर छाया धरावे ,
अपनी कृपाछत्र से मन ही मन झुलावे।
ॐ स्वामी। ॐ स्वामी। ॐ स्वामी। हरि ॐ तस्तत् ॥

॥ श्री गुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु ॥
|| श्री स्वामी समर्थार्पर्ण मस्तु||